इकाई 19 मार्क्सवाद : लुकाक्स, ग्राम्सी और फ्रैंकफर्ट स्कूल

इकाई की रूपरेखा

19.1 प्रस्तावना

19.2 जॉर्ज लुकाक्स (1885-1971)

19.2.1 द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का खण्डन

19.2.2 लेनिन की अग्रणी धारणा का परित्याग

19.2.3 पात्र तथा वस्तु में सम्बन्ध

19.3 ऐनटोनियो ग्राम्सी (1891-1937)

19.3.1 आधिपत्य की अवधारणा

19.3.2 बुद्धिजीवियों की भूमिका

19.3.3 प्रैक्सिस का दर्शन

19.3.4 आधार तथा अधिरचना के बीच सम्बन्ध तथा ऐतिहासिक गुट की अवधारणा

19.4 फ्रैंकफर्ट स्कूल (अथवा आलोचकीय सिद्धान्त)

19.4.1 सभी प्रकार के प्रभुत्व का विरोध

19.4.2 रुढ़िवादी मार्क्सवाद का निरनुमोदन

19.4.3 मुक्ति की खोज में

19.5 सारांश

19.6 अभ्यास प्रश्न

19.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने मार्क्सवाद के तीन प्रमुख प्रवक्ताओं - मार्क्स, लेनिन तथा माओ - के विचारों का अध्ययन किया है। जैसा कि हमने बताया भी है कि इन तीनों ने मार्क्सवादी सिद्धान्त में बहुत कुछ योगदान के रूप में दिया है, साथ ही उन्होंने क्रान्तिकारी व्यवहार व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लेनिन तथा माओ के संदर्भ में यह विशे-ा रूप में कहा जा सकता है। इस इकाई में हम अन्य तीन मुख्य धाराओं का विवेचन कर रहे हैं, जिन्होंने मार्क्सवादी सिद्धान्त को और अधिक समृद्ध बनाया है। इन धाराओं का सम्बन्ध लुकाक्स (हंगरी निवासी), ग्राम्सी (इटली निवासी) तथा फ्रैंकफर्ट स्कूल (जर्मनी) से है। आपके लिए यह समझना यहाँ आवश्यक है कि इन तीनों का योगदान मार्क्सवादी सिद्धान्त में अधिक है, क्रान्तिकारी व्यवहार व्यवस्था में इतना नहीं। इन तीनों के अतिरिक्त मार्क्सवाद के दर्शन में अन्य अनेकों का योगदान रहा है। इनमें ट्रॉटस्की, प्लैखनौव, सत्जानाविक, अल्थूसैर, कोल्कौस्वकी तथा पुलान्जास आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अन्य दूसरों, जिनमें चे गुअवारा, रैगिस डेबरे, फ्रान्ज़ फैनन आदि ने भी मार्क्सवादी चिन्तन व व्यवहार में अपना अपना योगदान दिया है। इस इकाई में लुकाक्स, ग्राम्सी तथा फ्रैंकफर्ट स्कूल आदि के विचारों तक ही अध्ययन सीमित रहेगा।

19.2 जार्ज लुकाक्स (1885-1971)

जार्ज लुकाक्स का जन्म बुडापेस्ट (हंगरी) में 15 अप्रैल, 1885 में हुआ था। बूडापेस्ट विश्वविद्यालय में स्नातकी के पश्चात् उन्होंने बर्लिन तथा हेडलवर्ग विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया। उनकी अभिरुचियाँ विविध रूप की थीं। अपने जीवन के पहले चरण में जब वह अध्ययन कर रहा थे, उन्होंने अपना काफी समय साहित्यिक आलोचना में भी व्यतीत किया था। इस क्षेत्र में उनकी आरंभिक रचनाएँ यह रही हैं: *सोल एण्ड फार्म* (1910), *हिस्ट्री ऑफ़ डवैलपमेंट ऑफ़ माडर्न ड्रामा* (1911), *ऐस्थैटिक कल्चर* (1913) तथा *थ्यौरी ऑफ़ नावॅल* (1916)। इन का आरंभ में झुकाव नैतिक आदर्शवाद में था। इस काल में उन पर प्लेटो तथा हेगेल के प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है। धीरे धीरे वे मार्क्सवादी चिन्तन की ओर आकर्नित हुये और कुछ ही व-र्नों में वे अपने देश के साम्यवादी आन्दोलन से जुड़ गये। वे हंगरी के साम्यवादी दल के सदस्य बन गये तथा 1919 में थोड़ी देर के लिए बनी साम्यवादी सरकार में उन्होंने शिक्षा मंत्री के पद को भी संभाला था। साम्यवादी शासन के पतन पर हंगरी की नई सरकार ने उन पर मुकदमा चलाया तथा उन्होंने मृत्यु दण्ड दिया। वह हंगरी से भाग निकले तथा उन्होंने अगले 20 व-र्न ऑस्ट्रिया, जर्मनी तथा सोवियत संघ में गुज़ारे। अपने आस्ट्रिया वास के दौरान उन्होंने अपनी सुप्रसिद्ध रचना *हिस्ट्री एण्ड क्लास कान्शसनैस* लिखी। लुकाक्स की यह ऐसी रचना है, जिसने मार्क्सवादियों की एक बड़ी संख्या को प्रभावित किया था। वास्तव में, फ्रांस तथा 1960 के दशकों में यूरोप के अनेक देशों में विद्यार्थियों द्वारा आन्दोलन इस रचना से प्रेरित हुए माने जाते हैं। फ्रैंकफर्ट स्कूल भी लुकाक्स के विचारों से प्रभावित था। वे 1945 में हंगरी वापस आ गये तथा बुडापेस्ट विश्वविद्यालय में एस्थैटिक्स के प्रोफेसर बन गये। यहाँ वह सक्रिय राजनीति में भाग लेने लगे, जिसके परिणामस्वरूप वे अनेक कोणों से आलोचना का कारण भी बने। 1956 में, वे स्टालिन विरोधी वातावरण के परिणामस्वरूप हंगरी में इमरे की साम्यवादी सरकार में कुछ महीनों के लिए संस्कृति विभाग का मंत्री भी बनाये गये। इस सरकार के पतन के साथ उन्होंने रूमानिया निर्वासित कर दिया गया। परन्तु वे 1957 में वापस हंगरी आ गया। उसके पश्चात् वह अपनी मृत्यु (जून 4, 1971) तक हंगरी में रहे तथा उस दौरान वे दार्शनिक व साहित्यिक रचनाओं के लेखन का कार्य करता रहे।

19.2.1 द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का खण्डन

आप जानते हैं कि मार्क्स ने भवि-यवाणी की थी कि जब पूंजीवाद में विरोधाभास विकसित हो जाएँगे, तो सर्वहारा क्रान्ति द्वारा पूंजीवाद को उखाड़ फैंकेगा। परन्तु 20वीं शताब्दी के दौरान देखा गया कि मार्क्स की भवि-यवाणी सही नहीं हुई और सामयिक संकटों के चलते पूंजीवाद फलता-फूलता रहा। यह सभी उत्तर-मार्क्स मार्क्सवादियों के समक्ष समस्या रही कि वह पूंजीवाद के अन्त के न होने को संसार को कैसे समझाएँ। पिछली इकाई में यह बताया गया है कि लेनिन ने इस संदर्भ में यह तर्क दिया था कि पूंजीवाद का अंत इस कारण नहीं हुआ है, क्योंकि पूंजीवाद अपने उच्चतम चरण, अर्थात् साम्राज्यवाद की ओर निकल गया था जो उसकी दृ-िट में पूंजीवाद का उच्चतम चरण भी था तथा अन्तिम चरण भी। लुकाक्स, ग्राम्शी तथा फ्रैंकफर्ट स्कूल ने इस तत्व की व्याख्या अन्य उत्तरों द्वारा दी। लुकाक्स ने तर्क दिया कि पूंजीवाद को उखाड़ फैंकने के लिये सर्वहारा का मात्र होना ही पर्याप्त नहीं होता जैसा कि मार्क्स ने कहा था, लुकाक्स ने कहा कि सर्वहारा के अस्तित्व के साथ उसमें क्रान्तिकारी चेतना का होना भी ज़रूरी है। वे इस तथ्य के आलोचक थे कि मार्क्सवाद अन्य भौतिक विज्ञानों की भाँति कोई विज्ञान है। उन्होंने ऐंग्लस के इस तर्क की आलोचना की कि मानवीय व्यवहार द्वंद्वात्मक कानूनों द्वारा संचालित होता है। उन्होंने ऐंग्लस की इस आधार की भी आलोचना की कि

सामाजिक सम्बन्धों में ऐसा संभव नहीं है, क्योंकि जो सम्बन्ध पात्र तथा वस्तु में सामाजिक संसार में होते हैं, वैसे सम्बन्ध उनमें प्राकृतिक संसार में नहीं होते। उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि विचार भौतिक संसार का दर्पण नहीं होते अथवा उसका प्रतिबिंब नहीं होते। उन्होंने मार्क्सवाद के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का खण्डन किया। इसी प्रकार ग्राम्सी ने भी इस मार्क्सवादी धारणा पर प्रश्न-चिह्न लगाया कि आर्थिक आधार ही वैचारिक-राजनीतिक अधिरचना को निर्धारित करता है। उन्होंने यह बताने का प्रयास किया कि एक वर्ग दूसरे वर्ग पर अपना अधिकार कैसे स्थापित करता है। उन्होंने तर्क दिया कि एक वर्ग का दूसरे वर्ग पर शासन आर्थिक तथा भौतिक शक्ति पर ही मात्र निर्भर नहीं करता, अपितु, इस तथ्य पर भी निर्भर करता है कि एक वर्ग अपनी योग्यता के बल पर शासितों पर अपने सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्य कैसे थौपने की क्षमता रखता है। अतः जहाँ लुकाक्स शासकों की भौतिक शक्तियों की अपेक्षा चेतना की भूमिका पर बल देता है, वहाँ ग्राम्सी भौतिक आधार की अपेक्षा सांस्कृतिक पहलुओं की भूमिका को अधिरचना के निर्धारण में महत्वपूर्ण मानता है।

लुकाक्स ने मार्क्सवाद का दार्शनिक संशोधन किया था। उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अनेक मुख्य पहलुओं पर प्रश्न-चिह्न लगाए थे। उन्होंने ऐतिहासिक भौतिकवाद पर प्रहार किया जो मार्क्सवाद का एक मुख्य आधार है। उन्होंने तर्क दिया कि यह सामान्य मार्क्सवाद का उदाहरण है कि कुछेक आर्थिक कानून निश्चित करेंगे कि क्रान्ति के लिए स्थिति तैयार है या नहीं है। उन्होंने दावा किया कि भौतिक परिस्थितियाँ अपने आपमें इतिहास को नहीं बदल सकतीं। सामाजिक क्रान्ति पूंजीवाद में विरोधाभास की तीव्रता का फल नहीं होती। सामाजिक क्रान्ति तो तब होती है, जब एक वर्ग इन विरोधाभासों के बारे में सचेत हो जाता है। अतः उन्होंने मानवीय चेतना की रचनात्मक भूमिका पर बल दिया। पिछली इकाई में मार्क्स के विचारों को बताते हुए कहा गया कि मार्क्स के अनुसार समाज में परिवर्तन तब होते हैं, जब उत्पादन की शक्तियों/साधनों तथा उत्पादकीय सम्बन्धों में विरोधाभास तीव्र हो जाते हैं। लुकाक्स ने इस तर्क को उल्टा कर दिया। उन्होंने मत व्यक्त किया कि उत्पादन के साधनों/शक्तियों तथा सम्बन्धों में विरोधाभास (जो स्वयं में एक वस्तुपरक सत्य है) अपने आपमें समाज में परिवर्तन नहीं ले आते, जब तक कि सर्वहारा वर्ग रूपी एक मानवीय पात्र इस विरोधाभास को समझ नहीं लेता। इस तथ्य को दूसरे शब्दों में इस प्रकार बताया जा सकता हैः लुकाक्स इस मूल मार्क्सवादी तथ्य को स्वीकार नहीं करते कि पदार्थ पहले आता है तथा मस्ति-क बाद में यह सत्य कि सर्वहारा का शो-ाण तथा उसका अलगाव होना क्रान्ति लाने के लिए काफी नहीं होता; क्रान्ति लाने के लिए सर्वहारा वर्ग शो-ाण व अलगाव के प्रति सचेत हो। अतः लुकाक्स ने लगभग अर्द्ध-हेगलवादी सोच अपनायी। यह लगभग ऐसा कहना है कि सचेतन पहले तथा पदार्थ बाद में आता है। वास्तव में, ऐसा लगता है कि लुकाक्स फ्यूरबैक के मार्क्सवादी धारणा से सहमत हैं कि ऐतिहासिक विकास में आवश्यक तत्व विरोधाभास नहीं है परन्तु सर्वहारा को इस विरोधाभास के लिए सजग होना है जो उसे उसके समाधान खोजने की प्रक्रिया में प्राप्त होता है। सर्वहारा में विरोधाभास की चेतना प्रत्यक्ष रूप से नहीं उभरती, अपितु तब उभरती है, जब वह अलगाववाद को अनुभव रूप में प्राप्त करता रहता है। लुकाक्स का तर्क है कि भौतिक संसार के प्रतिकूल सामाजिक प्रकार की दुनिया में वस्तुपरक ऐतिहासिक कानून नहीं होते जो मानवीय नियन्त्रण के अधीन नहीं आते।

19.2.2 लेनिन की अग्रणी धारणा का परित्याग

लुकाक्स की उपर्युक्त स्थिति लेनिन द्वारा प्रतिपादित साम्यवादी दल की भूमिका से सम्बंधित धारणा का भी परित्याग करती है कि वह सर्वहारा वर्ग का अग्रणी है। लुकाक्स कहता है कि क्रान्ति लाने हेतु सर्वहारा में क्रान्ति की चेतना किसी बिचौलिये के माध्यम से नहीं आती, अपितु सीधे शो-ाण व अलगाव

के सहने के फलस्वरूप आती है। इस प्रकार सचेतन कोई बाहरी अथवा ऊपरी श्रेणी नहीं रहती जैसा कि मार्क्स में हम देखते हैं। लेनिन की स्थिति उनकी रचना *वट इज़ टू बी डन* (1902) में यह है कि सर्वहारा वर्ग में क्रान्तिकारी सचेतन (पूंजीवाद को उखाड़ फैंकने की सजगता) बाहरी तत्वों (व्यवसायिक क्रान्तिकारी) के माध्यम से आता है, क्योंकि वह ही ऐतिहासिक विकास के वि-ाय में स्प-ट सजगता रखते हैं, जो सर्वहारा अपने आपमें नहीं रखता। लेनिन के तर्क के अनुसार, साम्यवादी दल ऐसे उपर्युक्त यंत्र का प्रतिनिधित्व करता है, जो सर्वहारा में क्रान्तिकारी सचेतन उत्पन्न कर सकता है। परन्तु लुकाक्स के लिए तो सर्वहारा को अपना ऐसा सचेतन बिना किसी बाहरी सहायता के प्राप्त होना चाहिए। इस प्रश्न पर कि सर्वहारा कैसे क्रान्तिकारी सचेतन प्राप्त करेगा, लुकाक्स का उत्तर यह था ऐसा सचेतन मज़दूरों की परि-ादों के माध्यम से आएगा, न कि दलीय संगठन द्वारा जैसा कि लेनिन सोचते थे।

19.2.3 पात्र तथा वस्तु में सम्बन्ध

शास्त्रीय भौतिकवाद में सचेतन को वास्तविकता का मात्र प्रतिबिंबन समझा जाता है तथा केवल वैध तथ्य समग्रता है, जिसे केवल द्वंद्वात्मक तरीके द्वारा ही समझा जा सकता है। लुकाक्स ने इसे चिन्तनशील अथवा ज्ञान की नक्ल का सिद्धान्त का नाम दिया जो वस्तुतः झूठी वस्तुपरकता प्रतीक है। यह लुकाक्स का एक जटिल तर्क है। वह यह कह रहे हैं कि किसी वस्तु मात्र की वास्तविकता पर रुकना वस्तुओं के प्रकटन मात्र को समझना है। उनके अनुसार, सर्वहारा की क्रान्तिकारी प्रैक्सिस उसे सचेतन के नवीन तथा उच्चतर रूप को प्राप्त करने में सहायक होती है। जब सर्वहारा पूंजीवाद में अपने आपको एक वस्तु, मात्र वस्तु, देखना आरंभ करता है, तब वह मात्र वस्तु बन कर नहीं रह जाता, वह परिवर्तन का कर्ता अर्थात पात्र बन जाता है। इस प्रकार वास्तविकता की यह समझ सर्वहारा को वास्तविकता के परिवर्तन हेतु सक्षम बना देती है। लुकाक्स आगे यह भी तर्क देते हैं कि वस्तु तथा पात्र एक दूसरे के साथ आधार-अधिरचना की भाँति सम्बन्धित नहीं होते, वह तो एक एकल द्वंद्ववाद में एक-दूसरे के साथ, सह-अस्तित्व की स्थिति में रहते हैं। दूसरे शब्दों में, जहाँ मार्क्स ने यह तर्क दिया था कि समाज की भौतिक परिस्थितियाँ इतिहास को परिवर्तित करती हैं, वहाँ लुकाक्स के अनुसार सचेतन इतिहास की प्रक्रिया में मात्र प्रतिबिम्बन नहीं है, अपितु एक ऐसा कर्त्ता/माध्यम है जिसके द्वारा इतिहास को बदला जा सकता है। जहाँ सचेतन भौतिक परिस्थितियों का फल है, वहाँ वह ऐसी चालक शक्ति भी है जिससे कि भौतिक परिस्थितियों को बदला जा सकता है। रुढ़िग्रस्त मार्क्सवादी सोच यह है कि सर्वहारा के अस्तित्व की परिस्थितियाँ उसकी चेतना को निर्धारित करती हैं, वहाँ लुकाक्स का मत है कि सर्वहारा की चेतना उसके अस्तित्व की परिस्थितियों को बदल सकती है। इस प्रकार, सचेतन सर्वहारा की स्व-मुक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण निर्णायक कारक है। इस क्रान्तिकारी सचेतन की प्राप्ति के फलस्वरूप सर्वहारा अपने आपको "अपने वर्ग रूप" से निकाल कर "अपने वर्ग के लिए रूप" में, अर्थात् "इतिहास की एक वस्तु रूप" से निकल कर "इतिहास के एक पात्र रूप" में परिवर्तित कर सकता है।

19.3 ऐनटोनियो ग्राम्सी (1891-1937)

ग्राम्सी का जन्म सारडीना के एक निर्धन परिवार में हुआ था। सारडीना इटली के निर्धनतम क्षेत्रों में से एक निर्धन क्षेत्र था। ग्राम्सी छोटी आयु का एक बच्चे थे, जबकि उनके पिता को ग़बन के मामले में बन्दी बनाया गया था तथा जिसके कारण उसे पाँच साल के कारावास का दण्ड भोगना पड़ा था। पिता की अनुपस्थिति में ग्राम्सी परिवार को काफी गरीबी में समय गुजारना पड़ा। इस कारण स्वयं

ग्राम्शी को शारीरिक विरूपता से ग्रस्त होना पड़ा और वह कुबड़े भी बन गये। प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात् ग्राम्सी एक कार्यालय में काम करने लगा। 1911 में उसे छात्रवृत्ति प्राप्त हुई और उन्होंने तुरिन विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। तुरिन में ग्राम्सी ने देखा कि शहरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में जीवन स्तर को लेकर काफी अंतर था। तुरिन वास के दौरान वह इतावली समाजवादी पार्टी के निकट आ गये। धीरे-धीरे वे मार्क्सवादी विचारों की ओर आकर्-ित हो गये। वे कॉर्स के उन धारणाओं से भी काफी प्रभावित हुए, जिनके अंतर्गत उन्होंने इतिहास के विकास पर संस्कृति तथा चिन्तन की भूमिका पर बल दिया था। कॉर्स के ऐसे विचारों ने उन्हें ऐसा ऐतिहासिक दायरा प्रदान किया, जिसके अंतर्गत उन्होंने मार्क्सवादी विचारों को अपनाने का प्रयास किया था। 1914-15 में उन्होंने मार्क्स पर आयोजित अनेक व्याख्यानों को सुना, जिनके फलस्वरूप उनकी मार्क्स के आधार-अधिरचना सम्बन्धों की समस्याओं में अभिरुचि विशे-ातः बढ़ने लगी। वह सर्वहारा आन्दोलनों में भी भाग लेने लग गये। जब 1921 में इतालवी साम्यवादी दल की स्थापना हुई तो ग्राम्सी उसके संस्थापकों में से एक सदस्य थे। शीघ्र ही, वह साम्यवादी दल के महासचिव बन गये और मेयर के लिए भी निर्वाचित हुए। फासीवाद के उदय के दौरान के दिनों में ग्राम्सी को 1926 में बन्दी बना लिया गया तथा अपनी मृत्यु तक वे जेल में ही रहे। अपने जेल वास में ग्राम्सी ने अनेक मुद्दों पर लिखा। यह सभी लेख, बाद में, *प्रिज़न नोटबुक्स* के रूप में प्रकाशित किए गए। ग्राम्सी इन *नोटबुक्स* के कारण लुकाक्स की भांति हेगलवादी मार्क्सवाद के एक महान सिद्धान्तकार बन गये। उनकी अन्य मुख्य रचना *मॉडर्न प्रिंस* तथा कुछ अन्य रचनाएँ भी थीं।

19.3.1 आधिपत्य की अवधारणा

ग्राम्सी की *प्रिज़न नोटबुक्स,* तथा *मॉडर्न प्रिंस* तथा *अन्य रचनाएँ* राजनीति, इतिहास, संस्कृति तथा दर्शन के विविध मुद्दों से सम्बन्धित हैं, परन्तु इस इकाई में हम कुछेक पर ही चर्चा करेंगे; जैसे उनकी आधिपत्य की अवधारणा, बुद्धिजीवियों की भूमिका पर उनके विचार, उसके प्रैक्सिस का दर्शन तथा आधार व अधिरचना के बीच सम्बन्धों का विश्ले-ाण। इनमें उन के द्वारा प्रतिपादित आधिपत्य की अवधारणा ग्राम्सी की महत्वपूर्ण व मौलिक देन कही जा सकती है। पिछली इकाई में यह बताया गया है कि सभी समाजों में दो वर्ग होते हैं : एक वर्ग वह जो उत्पादन के साधनों का स्वामी होता है, तथा दूसरा वर्ग वह जिसके पास केवल श्रम शक्ति होती है। वह वर्ग जो उत्पादन के साधनों का स्वामी होता है, वह दूसरे वर्ग अथवा श्रम -शक्ति रखने वाले वर्ग पर शासन करता है तथा उसका शो-ाण करता है। अतः मार्क्सवादी प्रयोजन में, पूंजीवादी राज्य पूँजीपतियों की प्रबंधनकारी समिति है जो समाज में शो-ाणकारी, प्रक्रियाओं को सहायता भी करती है तथा वैधता भी प्रदान करती है। यह आर्थिक शक्ति (अथवा उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व) सत्तारुढ़ि दल को सत्ता पर अधिकार स्थापित करने में सक्षम बनाती है। ग्राम्सी ने मार्क्स की इस सोच को चुनौती दी थी। उन्होंने तर्क दिया कि शासकीय वर्ग अनेक विविध तरीकों से अपना आधिपत्य स्थापित करता है। इन तरीकों में बल का प्रयोग, उसकी आर्थिक शक्ति का उपयोग, शासितों की सहमति आदि का उल्लेख किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, पूंजीवादी वर्ग अपना प्रभुत्व मात्र बल के माध्यम से स्थापित नहीं करता, अपितु अन्य अनेक ग़ैर-उत्पीड़क तरीकों द्वारा भी अपना अधिकार बनाए रखता है। उनकी रचनाओं में दो ग़ैर-उत्पीड़क तरीकों का वर्णन विशे-ातः मिला हैः **एक,** शासकीय वर्ग की यह योग्यता है जिसके माध्यम से यह वर्ग जनसाधारण पर अपने मूल्य तथा विश्वास व्यवस्थाएँ थोंपता है। ग्राम्सी का कहा है कि शासकीय वर्ग समाजीकरण के विभिन्न तरीकों द्वारा शासितों पर अपनी संस्कृति लागू करने का प्रयास करता है। शासकीय वर्ग शासितों के मन-मस्ति-क पर अपनी संस्कृति अनेक तरीकों से थोपना का यत्न करता है। अतः ग्राम्सी के अनुसार, सांस्कृतिक आधिपत्य शासकों की शासन- शक्ति का आधार है; **दूसरे,**

ग्राम्सी दावा करते हैं कि शासकीय वर्ग सदैव अपने संकीर्ण वर्ग हित को पूरा नहीं करता। अपनी शासकी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए शासकीय वर्ग समाज के अन्य अनेक वर्गों के साथ समझौते आदि करता है और उस प्रक्रिया में एक ऐतिहासिक गुट बनाता है। इस सामाजिक/ऐतिहासिक गुट बनाने की रणनीति के कारण तथा फलस्वरूप शासकीय वर्ग शासितों पर शासन करने की सहमति प्राप्त कर लेता है। आप देखेंगे कि ग्राम्सी का यह तर्क रूढ़िग्रस्त मार्क्सवादी सोच से हट करके है, जिसमें पूँजीपतियों में निहित शासन करने की शक्ति का आधार यह होता है कि पूँजीपतियों के पास उत्पादन के साधानों पर नियंत्रण होता है। ग्राम्सी के तर्क में आर्थिक कारक की अपेक्षा **विचार** तथा **संस्कृति** कारक केन्द्रीय स्थिति प्राप्त कर लेते हैं। दूसरे, ग्राम्सी का यह तर्क है कि शासकीय वर्ग का आधिपत्य उस वर्ग का अन्य वर्गों के साथ समझौते आदि के कारण होता है, यह तर्क भी रूढ़िग्रस्त मार्क्सवादी सोच से अलग है जिसमें राज्य को पूँजीपतियों की प्रबंधन समिति कहा गया है। ग्राम्सी तो सर्वहारा द्वारा अन्य वर्गों के साथ समझौते द्वारा पूंजीवादी शासक को हटाने का भी पक्ष लेते हैं। वे एक ऐतिहासिक गुट के निर्माण की ज़रूरत पर बल देते हैं।

19.3.2 बुद्धिजीवियों की भूमिका

एक प्रश्न यह उठता है कि समाज में शासकीय वर्ग अपना आधिपत्य कैसे स्थापित करता है। ग्राम्सी का उत्तर है कि शासकीय वर्ग बुद्धिजीवियों की सहायता से अपना प्रभुत्व स्थापित करता है। परन्तु ग्राम्सी ने यह भी कहा कि बुद्धिजीवी समाज के क्रान्तिकारी परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बुद्धिजीवी जनसाधारण को एक ऐसा चिन्तन प्रदान करते हैं जिसके माध्यम से वे पूँजीपतियों की शासकीय स्थिति को चुनौती देते हैं। इस संदर्भ में ग्राम्सी बुद्धिजीवियों की दो श्रेणियों की बात करते हैः **परम्परागत** बुद्धिजीवी तथा **जैविक** बुद्धिजीवी। पहली प्रकार के बुद्धिजीवी वे हैं, जो अपने आपको किसी भी वर्ग के साथ नहीं जोड़ते। इस दृ-टि से ऐसे बुद्धिजीवी स्वतंत्र बुद्धिजीवी कहे जा सकते हैं। दूसरी ओर, जैविक बुद्धिजीवी वे बुद्धिजीवी हैं, जो या तो शासकीय वर्ग से जुड़े होते हैं अथवा जन साधारण से। जो बुद्धिजीवी शासकीय वर्ग से सम्बन्धित होते हैं, वे उन विचारों पर ज़ोर देते हैं जिनके माध्यम से शासकीय वर्ग को शासन करने की वैधता प्राप्त होती है। जो बुद्धिजीवी जन-साधारण से जुड़े होते हैं, वे समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए कार्य भी करते हैं तथा क्रान्ति के लिए नेतृत्व भी प्रदान करते हैं। ऐसे बुद्धिजीवी सर्वहारा वर्ग से भी उभरते हैं।

19.3.3 प्रैक्सिस का दर्शन

ग्राम्सी ने अपनी *प्रिज़न नोटबुक्स* में लिखा था कि उनके प्रैक्सिस का सिद्धान्त हेगलवाद का एक सुधार तथा उसका एक विकसित रूप है। उनके लिए प्रैक्सिस का दर्शन सिद्धान्त तथा व्यवहार की अंतःक्रिया है। मार्क्स के लेखन में, प्रैक्सिस सृजनात्मक तथा स्व-सृजनात्मक क्रिया है, जिसके माध्यम से लोग अपनी ऐतिहासिक सृ-टि तथा अपने आपको बनाते व बदलते हैं। ऐसी क्रिया मनु-यों से जुड़ी क्रिया है और इस क्रिया के कारण लोग अन्य जीवों से अलग होते हैं। यह सिद्धान्त तथा व्यवहार का संगम इस रूप में है कि सिद्धान्त व्यवहार को समृद्ध करता है तथा व्यवहार सिद्धान्त को। मार्क्स ने प्रैक्सिस की धारणा की *थीसिस ऑफ़ फ्यूरबैक* में विवेचना की थी। ग्राम्सी ने मार्क्सवाद को प्रैक्सिस का सिद्धान्त बताया था। वे स्वयं भी व्यवहारिक क्रान्तिकारी गतिविधियों से सम्बन्धित रहा था। ग्राम्सी का मानना था कि मनु-य अपने तथा अपने साथियों के विकास को प्रभावित कर सकता है, यदि उसे इस तथ्य का स्प-ट ज्ञान हो कि उनके समक्ष क्या कुछ करने की संभावनाएँ खुली हुई हैं। इसके लिए सर्वप्रथम उसे अपनी ऐतिहासिक स्थिति को समझना होगा, जिसमें वे अपने आपको पाता है; यदि वह

अपनी स्थिति को जान जाता है तो उसके लिए उस स्थिति को बदलने के लिए सक्रिय भाग लेना कठिन नहीं होता; बदलने के लिए सक्रिय होना, सक्रिय होने के लिए स्थिति को समझना अनिवार्य होता है। क्रिया करने वाला ही एक दार्शनिक होता है और दार्शनिक के लिए उसे क्रिया करने वाला अवश्य होना चाहिए। ग्राम्सी का कहना है कि प्राकृतिक संसार के एक भाग होने के रूप में व्यक्ति उस प्राकृतिक संसार के साथ सम्बन्ध नहीं जोड़ लेता, वह तो एक ऐसे प्राकृतिक संसार के साथ तब सम्बन्ध जोड़ता है, जब वह अपने कार्यों व तकनीकों द्वारा उस पर काम करता है; ज़मीन के एक टुकड़े पर खड़े होने मात्र से हमारा सम्बन्ध उस ज़मीन के टुकड़े के साथ नहीं जुड़ जाता; उस ज़मीन के टुकड़े के साथ हमारा सम्बन्ध तब जुड़ता है जब हम उस ज़मीन पर हल जोतते हैं अथवा बीज डालते हैं अथवा फसल काटते हैं। यह ऐतिहासिक सृजनता तथा ऐतिहासिक परिस्थितियों की समझ है, जिसमें कि एक व्यक्ति स्वयं को पाता है और जिसके कारण वह अपने आपको तथा अपनी परिस्थितियों को बना पाता है।

19.3.4 आधार तथा अधिरचना के बीच सम्बन्ध तथा ऐतिहासिक गुट की अवधारणा

1914-15 में मार्क्स पर आयोजित कुछ व्याख्याओं में ग्राम्सी आधार-अधिरचना के बीच सम्बन्धों की समस्याओं में रुचि लेने लगा। आप जानते हैं कि मार्क्स ने यह मत व्यक्त किया था कि किसी भी समाज में तब तक परिवर्तन नहीं हो सकते, जब तक परिवर्तन से सम्बन्धित अनुकूल परिस्थितियाँ तैयार नहीं हो जातीं। एक समाज को दूसरे समाज में तब तक नहीं बदला जा सकता, जब तक उस समाज में आर्थिक सम्बन्धों से सम्बन्धित सब प्रकार का विकास नहीं हो जाता। *क्रीटिक ऑफ़ पोलिटिल एकोनिमी* में मार्क्स ने लिखा थाः "कोई भी सामाजिक व्यवस्था तब तक न-ट नहीं होती, जब तक उसमें निहित उत्पादकीय शक्तियाँ सम्पूर्ण रूप से विकसित नहीं होतीं तथा तब तक नवीन उच्चतर उत्पादकीय सिद्धान्त उदित नहीं होते, जब तक पुराने समाज की कोख में उनके अस्तित्व से जुड़ी भौतिक परिस्थितियाँ निर्गित नहीं हो जाती।" मार्क्स के अनुसार, समाज की आर्थिक व्यवस्था उसके लिए आधार प्रदान करती है तथा राजनीतिक व्यवस्था उस आधार की अधिरचना होती है। अधिरचना का स्वरूप आर्थिक आधार के स्वरूप पर निर्भर करता है। ग्राम्सी ने मार्क्सवाद की इस धारणा में भी संशोधन किया था। उन्होंने ऐतिहासिक गुट की बात की थी। ग्राम्सी के लिए ऐतिहासिक गुट एक ऐसी स्थिति थी, जिसमें वस्तुपरक तथा आत्मपरक, दोनों की शक्तियाँ एक क्रान्तिकारी स्थिति पैदा करती हैं। यह वह स्थिति है, जब कि पुरानी व्यवस्था चरमरा रही है और ऐसे लोग हैं, जिसमें उस स्थिति का लाभ उठाने के लिए इच्छा तथा अंतदृ-टि दोनों हैं। आधार तथा अधिरचना का संगम तथा भौतिक परिस्थितियाँ और विचारधाराओं के मिलन से ऐतिहासिक गुट बनता है। दूसरे शब्दों में, भले ही उत्पादकीय शक्तियाँ ऐसे चरण पर पहुँच जाएँ जहाँ क्रान्ति संभव हो, फिर भी क्रान्ति के लिए ऐसे स्वस्थ बौद्धिक विश्ले-ाण का होना अनिवार्य होता है, जिसमें समाज में पनप रहे विरोधाभासों का प्रतिबिंब हो सके।

ग्राम्सी के लिए द्वंद्व का अर्थ हैः निम्नलिखित तीन तत्वः

i) बुद्धिजीवियों (दलीय नेताओं) तथा जन-साधारण में अंत-क्रिया;

ii) ऐतिहासिक घटनाओं की वाद, प्रतिवाद तथा संवाद के संदर्भ में व्याख्या;

iii) उप-अधिरचना तथा अधिरचना के बीच सम्बन्ध।

सामान्य (अशि-ट) प्रकार के मार्क्सवाद में, अधिरचना अर्थात् नैतिकता, कानून, दर्शन, कला तथा समस्त विचार व्यवस्था आर्थिक कारकों, जैसे उत्पादन के साधनों व विनिमय द्वारा निर्धारित होती है। भौतिक परिस्थितियाँ व्यक्ति की चेतना निश्चित करती हैं। ग्राम्सी ने इस विचार की आलोचना की थी। लुकाक्स की भाँति, ग्राम्सी ने मत व्यक्त किया कि क्रान्ति तथा क्रान्ति की तैयारियाँ लोगों के सचेतन में बड़े-बड़े परिवर्तन ले आते हैं। भौतिक संसार में द्वंद्व सामाजिक संसार के द्वंद्व से भिन्न होते हैं। भौतिक संसार में भौतिक स्वरूप भौतिक शक्तियों का प्रतिक्षेप होता है, परन्तु समाज में लोग उस द्वंद्वात्मक प्रक्रिया में स्वयं शक्ति का रूप धारण कर लेते हैं। अतः समाज में द्वंद्वात्मक प्रक्रिया वह स्थिति होती है, जिसमें उप-अधिरचना तथा अधिरचना एक दूसरे को प्रभावित करते हुए एक ऐतिहासिक गुट उत्पन्न करते हैं।

यह देखा जा सकता है कि लुकाक्स तथा ग्राम्सी में बहुत कुछ एक समान है। दोनों ने मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद को समझने के लिए सांस्कृतिक तथा दार्शनिक कारकों की भूमिका पर बल दिया था। दोनों ने मार्क्स में हेगल के आदर्शवाद तत्व को उभारने का प्रयास किया था। दोनों ने भौतिक शक्तियों की अपेक्षा सचेतना को अधिक महत्व दिया था। दोनों ने अधार तथा अधिरचना के सम्बन्धों को नई रोशनी में देखने का प्रयास किया था।

19.4 फ्रैंकफर्ट स्कूल (अथवा आलोचकीय सिद्धान्त)

फ्रैंकफर्ट स्कूल विचारकों के उस समूह का संकेत है, जो कभी 1920 तथा 1930 के दशकों में सामाजिक अनुसंधान के फ्रैंकफर्ट संस्थान में एक साथ काम करते थे। इस फ्रैंकफर्ट स्कूल में मुख्य थेः - हॉकर्हाइमर, अडौरनो, पॉलॅक, एरिक फ्रौम, न्यूमान तथा हर्बर्ट मारक्यूज़। इन सभी ने, एक अथवा दूसरे रूप में, मार्क्सवादी सिद्धान्त में अपना अपना योगदान दिया है। निःसन्देह अनेक मुद्दों पर इनके विचारों में भिन्नताएँ थीं, परन्तु इनकी रचनाओं में कहीं-कहीं कुछ समानता भी थी। इन सबके विचारों को *आलोचकीय सिद्धान्त* भी कहा जाता है। यह सब समाज में हर प्रकार के प्रभुत्व व शो-ाण का विरोध करते थे। ये सभी स्टालिनवादी समाजवाद के अलोचक थे। उन्होंने तर्क दिया कि समाजवाद बन्द समाज का उदाहरण नहीं है। वह रूढ़िग्रस्त समाजवाद को राजनीतिक-आर्थिक मुद्दों की अपेक्षा सांस्कृतिक तथा वैचारिक मुद्दों से अधिक जुड़े हुए थे।

19.4.1 सभी प्रकार के प्रभुत्व का विरोध

यह जानना आवश्यक है कि फ्रैंकफर्ट स्कूल के विचारकों ने किस संदर्भ में लेखन किया तथा कौन से मुद्दे उनके चिन्तन-मनन के वि-ाय रहे थे। उन्होंने उस समय लिखा था, जब जर्मनी में नाज़ीवाद तथा इटली में फासीवाद विद्यमान था। साथ ही, सोवियत संघ में सर्वसत्तावाद के रूप में स्टालिनवाद भी उनके लिए गंभीर चिन्ता का वि-ाय था। वे पश्चिम यूरोप में साम्यवादी आन्दोलनों की विफलता से भी परिचित थे। वे सभी प्रकार की विचारधाराओं की भी आलोचना करते थे, क्योंकि सभी प्रकार की विचारधाराएँ वास्तविकता का सही ब्यौरा नहीं देती थीं। वे उन विचारधाराओं का विशे-ा रूप से विरोध करते थे जो शो-ाण व अलगाव की व्यवस्थाओं को छिपाने का अथवा उनको वैधता प्रदान करने का प्रयास करते थे। ऐसी विचारधाराओं का आलोचनात्मक विश्ले-ाण करके, फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वान उनमें निहित प्रभुत्व की जड़ों की खोज करना चाहते थे। ऐसा करके उन्होंने लोगों में सही सचेतन जगाने तथा उन्हें क्रान्तिकारी क्रियाओं के लिए तैयार करने का यत्न किया। अतः उनका लक्ष्य मार्क्स के लक्ष्य की भाँति समाज का मार्क्सकारी परिवर्तन करना था, परन्तु एक अलग तरीके से।

फ्रैंकफर्ट स्कूल के विचारकों ने उन सांस्कृतिक व सामाजिक दर्शन व प्रथाओं/व्यवहारो की भी आलोचना की, जिनका लक्ष्य पूंजीवाद के दायरे में उत्पन्न नीरस जीवन से भागना होता था, अथवा जो असमानताओं को मानव-कृत न मानकर प्राकृतिक अथवा ईश्वर-कृत बताया करते थे।

19.4.2 रुढ़िग्रस्त मार्क्सवाद का निरनुमोदन

फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वानों ने उन रुढ़िग्रस्त मार्क्सवादी अवधारणाओं की आलोचना की, जो सोवियत संघ में दमनकारी तथा सत्तावादी तत्व प्राप्त कर चुके थे। कुछेक ने तो यह मत व्यक्त किया कि मार्क्सवाद दफतरशाही प्रवृतियों की व्याख्या करने में पर्याप्त नहीं है। लुकाक्स तथा ग्राम्सी की भाँति फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वानों ने ऐतिहासिक भौतिकवाद की मार्क्सवादी अवधारणा पर प्रश्नचिह्न लगाया जो सभी ऐतिहासिक घटनाओं को आर्थिक संदर्भ में व्याख्या करने का प्रयास करता था। उन्होंने यह तर्क दिया कि मार्क्सवाद मानवीय आत्मप्रक्ता की भूमिका को कम महत्व देता है। वास्तव में, उन्होंने यह स्प-ट करने का प्रयास किया कि मार्क्स का नियतत्वता पर बल उनके द्वारा प्राकृतिक विज्ञानों में प्रत्यक्षवादी पद्धति को स्वीकार करने का फल था। इसके अतिरिक्त यह नहीं माना जा सकता कि सभी समाजों में उत्पादकीय सम्बन्धों तथा उत्पादकीय शक्तियों में विरोधाभासों के एक जैसे परिणाम होते हैं, जैसा कि रुढ़िग्रस्त मार्क्सवाद की मान्यता थी। यह इस तथ्य पर निर्भर करता है कि लोग इन विरोधाभासों को किस दृ-टि से देखते हैं तथा उन्हें किस प्रकार हल कर सकते हैं। इतिहास आंशिक रूप से जानकारी रखने वाले पात्रों के स्थित व्यवहारों द्वारा बनता है। अतः किसी ऐतिहासिक परिस्थिति को समझने के लिए सामाजिक-आर्थिक अधिरचना तथा सामाजिक व्यवहारों में परस्पर क्रियाओं को समझना आवश्यक है।

19.4.3 मुक्ति की खोज में

फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वानों की रचनाओं के मुख्य मुद्दे प्रभुत्वता तथा सत्ता थे। उन्होंने तर्क दिया था कि उदारवादी तथा समाजवादी समाजों में प्रभुत्वता तथा सत्ता को विवेक के नाम पर उचित ठहराया जाता है, जिसे उन्होंने 'सहायक परिमेयता' कहा। वास्तव में, यह प्राकृतिक विज्ञानों के प्रत्यक्षवादी तरीकों को सामाजिक विज्ञानों पर लागू करने का परिणाम था। प्राकृतिक विज्ञानों में हम भौतिक तत्वों का अध्ययन नियंत्रण तथा नियमित करने की दृ-टि से करते हैं, परन्तु मानवीय विज्ञानों में समाज के अध्ययन का लक्ष्य लोगों पर नियंत्रण व नियमन करना न होकर, उन्हें सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्ति दिलाना होता है। सभी पश्चिमी तथा पूर्वी समाजों में सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं/प्रयोगों का लक्ष्य प्रभुत्वता की व्यवस्था का उचित ठहराना होता है। इस दृ-टि से फ्रैंकफर्ट स्कूल को एक जवाबी-संस्कृति कहा जा सकता है। फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वान सत्तावादी पारिवारिक संगठनों तथा शिक्षा के सामाजिक प्रक्रियाओं की भी आलोचना करते हैं। वह यौन स्वतंत्रताओं का पक्ष लेते हैं। वे उन प्रक्रियाओं का भी खण्डन करते हैं, जिनके माध्यम से राजनीतिक दलों तथा बाज़ारू शोध एवं विज्ञापन एजेंसियों द्वारा जनमत को जोड़ा-मोड़ा जाता है।

19.5 सारांश

गत पृ-ठों में मार्क्सवाद की तीन मुख्य धाराओं की व्याख्या की गई है, जो 20वीं शताब्दी में देखने को मिली हैं। यह धाराएँ लुकाक्स, ग्राम्सी तथा फ्रैंकफर्ट स्कूल के विचारों से सम्बन्धित रही हैं। जहाँ यह

धाराएँ ब्यौरावार मामलों में एक-दूसरे से अलग-अलग थीं, इनमें कुछेक समान तत्व भी देखे गए हैं। उदाहरणतया, तीनों ने मार्क्सवाद के ऐतिहासिक भौतिकवाद की अवधारणा का कम अनुमान लगाया था, जिसके अंतर्गत आर्थिक नींव को अधिरचना का आधार माना जाता था। इसके विपरीत उन्होंने मानवीय सचेतन तथा इच्छा (लुकाक्स) तथा सांस्कृतिक पहलुओं (ग्राम्सी तथा फ्रैंकफर्ट स्कूल) पर अधिक बल दिया था। तीनों धाराओं ने यह बताने व समझाने का प्रयास किया था कि मार्क्स द्वारा पूंजीवाद तथा उनके अंत की भवि-यवाणी सही क्यों नहीं हो पायी। इन प्रश्नों के उत्तरों की खोज में उन्होंने कहा कि क्रान्ति के लिए मात्र सर्वहारा वर्ग का अस्तित्व ही काफी नहीं होता, अपितु उनके लिए सर्वहारा वर्ग द्वारा आवश्यक क्रान्तिकारी चेतना का होना भी आवश्यक होता है। उन्होंने यह भी बताया कि शासकीय वर्ग अनेक तरीकों, जैसे अपने सांस्कृतिक मानक, विश्वास तथा मूल्य आदि थोप कर जनता पर आधिपत्य स्थापित करता है। यह बुद्धिजीवियों का दायित्व है कि वह जनसाधारण का मार्गदर्शन करें। लुकाक्स, ग्राम्सी तथा फ्रैंकफर्ट स्कूल के विद्वानों ने यह भी बताया कि अपनी शासक व्यवस्था की स्थिरता के लिए प्रभुत्वता की सत्ता संरचना को कैसे तथा किन तरीकों से वैध बनाने का प्रयास किया जाता है।

19.6 अभ्यास प्रश्न

1. मार्क्सवादी सिद्धान्त में लुकाक्स का मुख्य योगदान क्या है?
2. आधिपत्य से ग्राम्सी का क्या मतलब था? उन्होंने किस प्रकार रुढ़िग्रस्त मार्क्सवाद में संशोधन किया?
3. फ्रैंकफर्ट स्कूल का क्या अर्थ है? इस स्कूल ने उदारवादी तथा समाजवादी समाजों की क्या समीक्षा प्रस्तुत की?